8

हम अपने पापों का क्या करें?

(4:11-16)

परमेश्वर की सन्तान के जीवन में पाप के भयंकर परिणाम हो सकते हैं। हमने देखा है कि पाप ने इस्राएल के साथ क्या किया। इसने उनके मनों को कठोर कर दिया, उन्हें अविश्वासी बना दिया और प्रतिज्ञा किए हुए देश में से एक पूरी पीढ़ी को बाहर रखा। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि वही विपत्ति मसीही लोगों पर भी आ सकती है। उसने अपने पाठकों को इस्राएलियों वाली गलती न करने के लिए प्रोत्साहित किया (आयत 11)।

यदि पाप इतना भयानक है, तो इसका क्या किया जा सकता है? विशेषकर, परमेश्वर के बालक को अपने पापों का क्या करना चाहिए? पूरी शिक्षा के दूसरे भाग (4:1-16) में हमने पहले ही देखा है। इस पाठ में अपने जीवनों में मुझे और आपको पापों का क्या करना चाहिए के सम्बन्ध में दो व्यावहारिक सुझावों का पता लगाने के लिए अन्तिम छह आयतों को ध्यान से देखें।

हम उन्हें छुपा नहीं सकते (4:11-13)

लोग कई प्रकार से अपने पापों के साथ पेश आते हैं। कुछ लोग उनका इनकार करते हैं, अन्य उनकी अनदेखी करते हैं, जबकि कई उनके लिए बहाने बनाते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो उन्हें *छुपाने* की कोशिश करते हैं। एक अर्थ में इब्रानियों के लेखक ने कहा कि अपने पापों को छुपाना असम्भव है। वचन उन्हें उघाड़ देता है (आयत 12)। इसके अलावा जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर को मालूम होता है (आयत 13)।

वचन हमारे पापों को सामने लाता है (4:12)।

पहली नज़र में लगता है कि आयतों 12 और 13 का उस बात से जो लेखक कह रहा था सीधा सम्बन्ध नहीं है; पर आयत 14 में ''इसलिए'' (*gar*) शब्द, जिसका अर्थ ''का कारण दिखाना'' है, इन आयतों को पिछली चर्चा के साथ जोड़ देता है। इस्राएली लोग इसलिए गिर गए थे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन पर ध्यान नहीं दिया था। यही बात हमारे लिए भी हो सकती है यदि हम पवित्र शास्त्र की शिक्षा पर ध्यान नहीं देंगे।

संदर्भ में ''परमेश्वर का वचन'' पुराने नियम की उन आयतों को कहा गया जिन्हें लेखक दोहरा रहा था, परन्तु संदेश परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रगट इच्छा पर लागू होता है। लेखक ने इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि वचन कितना शक्तिशाली है एक के बाद एक विवरणात्मक वाक्यांशों का इस्तेमाल किया। पहले तो यह ''जीवित और प्रबल'' है। इब्रानियों के लेखक ने भजन संहिता 95 को उद्धृत किया, जो सदियों पहले लिखा गया था। भजन संहिता मृत नहीं बल्कि जीवित संदेश था। ''प्रबल'' उस शब्द का अनुवाद है जिससे हमें ''ऊर्जा'' शब्द मिला है। वचन जीवित और

प्रबल है जिस कारण यह परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा कर सकता है (देखें यशायाह 55:11)।

परमेश्वर का वचन ''हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है'' (आयत 12क)। तलवार के रूप में वचन के चित्रण से कई सबक लिए जा सकते हैं (देखें इफिसियों 6:17), परन्तु इस आयत में डॉक्टर के सर्जिकल ब्लेड पर ध्यान करें, जो मरीज़ के शरीर के भीतरी अंगों को काटकर खोल देता है। वचन बड़ी सावधानी से छुपाए गए पाप को भी प्रगट कर सकता है।

दोधारी तलवार अर्थात परमेश्वर का वचन, ''जीव, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके'' चीर डालता है (आयत 12ख)। विद्वानों को ''जीव और आत्मा'' में अन्तर ढूंढ़ने में कठिनाई आती है और वे इस बात पर भयभीत होते हैं कि लेखक ने ''गांठ गांठ और गूदे-गूदे'' को शामिल क्यों किया। लेखक के शब्द सम्भवतया बाइबल की इस सच्चाई पर आधारित हैं कि व्यक्ति पूर्ण रूप में ''आत्मा और प्राण और देह [जिसमें गांठें और गूदा आता है]'' का बना होता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। संदेश यह है कि परमेश्वर का वचन मनुष्य को *पूरा* नंगा कर देता है। यदि हम सच्चे मन से वचन में देखें तो हम देख लेंगे कि हम वास्तव में क्या हैं (याकूब 1:22-25)।

इसलिए वचन ''*मन की* भावनाओं और विचारों को जांच'' सकता है (आयत 12ग)। इस्राएली लोग *मन* की समस्या के कारण जंगल में गिरे थे। परमेश्वर के वचन के साथ हमारे जीवनों को मिलाने पर हमारे मन प्रगट हो जाते हैं।

जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर को मालूम होता है (4:13)।

लेखक आसानी से परमेश्वर के वचन से परमेश्वर तक ही चला गया। परमेश्वर के वचन उसी की अभिव्यक्ति है यानी दोनों को अलग नहीं किया जा सकता।

वचन कहता है कि कोई परमेश्वर से छिप नहीं सकता: ''और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है'' (आयत 13क)। परमेश्वर सब कुछ जानता है। ''उसकी आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं'' (आयत 13ख)। ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दें जिसने अपने शरीर की कमियों को छुपाने के लिए जो भी कर सकता था किया है।[1] फिर उसके कपड़े उतारे जाने और हर दाग के दिखाई देने पर उसे होने वाली शर्मिंदगी पर विचार करें। इसी प्रकार से बाहरी तौर पर कोई कितना भी धार्मिक दिखाई क्यों न दे, परमेश्वर जानता है कि हम वास्तव में क्या हैं।

''जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं'' (आयत 13ग)। NIV में है ''जिसे हमें हिसाब देना है।'' इस समय परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है और एक दिन न्याय में हम उसके सामने खड़े होंगे और उस सब का हिसाब देंगे जो हमने कहा और किया है। इससे निष्कर्ष यही निकलता है कि हमें अपने पापों से मन फिराकर अपने जीवनों को बदल लेना आवश्यक है!

हमें अपने पापों को मानकर दया के लिए यीशु के पास लौटना आवश्यक है (4:14-16)

यदि हम अपने पापों को छुपा नहीं सकते तो हमें उनका क्या करना चाहिए? हमें उन्हें मानकर दया के लिए यीशु के पास लौट जाना चाहिए। 14 से 16 आयतों में हमारे दयालु महा

याजक यीशु की अद्‌भुत सच्चाइयां मिलती हैं। हमारे बड़े महा याजक के रूप में यीशु पर शिक्षा के भाग और शिक्षा के परिचय को समेटते हुए तीनों आयतें पुल का काम करती हैं। आयत 14 कहती हैं कि यीशु हमारा महायाजक है इस कारण हमें ''अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे'' रहना चाहिए, अर्थात उस अंगीकार को जो बपतिस्मा लेने से पहले हमने किया था, यानी यह अंगीकार कि यीशु ही मसीह है (देखें प्रेरितों 8:35-38; KJV)। यदि हम उस अंगीकार को थामे रखते हैं तो हम उसके पीछे चलना कभी छोड़ेंगे या बन्द नहीं करेंगे।

हमारा महायाजक सहानुभूति से भरा है (4:15)।

आयत 15 को सकारात्मक रूप में लिखें, ''हमारा एक महायाजक है जो हमारी निर्बलताओं के साथ सहानुभूति कर सकता है, क्योंकि वह हमारी ही तरह सब बातों में परखा गया (फिर भी बिना पाप के था)।'' यूनानियों के देवता अव्यैक्तिक थे और कुछ यूनानी दार्शनिक भी यह सिखाते थे कि ये देवता भावनाओं से रहित हैं। इसके अलावा कोई यह नहीं मानता था कि ये देवता पाप रहित हैं। यूनानी दन्त कथाओं के अनुसार जब देवता लोग ओलिम्पुस पहाड़ से नीचे आए, तो उन्होंने दुष्ट से दुष्ट लोगों जैसा व्यवहार किया। यूनानी लेखों में हमारे महायाजक से मिलाने वाली कोई बात नहीं थी जिसमें एक पाप रहित ईश्वरीय जीव हो जो अपने अनुयायियों के साथ इस कारण सहानुभूति रख सके क्योंकि उसे भी वह सब सहना पड़ा था जो उन्हें सहना पड़ता है।

हम हियाव के साथ उसके सामने आ सकते हैं (4:16)।

''इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें'' (आयत 16क)। एक दिन यीशु का सिंहासन न्याय का सिंहासन होगा; परन्तु अभी परमेश्वर के विश्वासयोग्य बालक के लिए यह ''अनुग्रह का सिंहासन'' है, जिसका अर्थ है ''वह सिंहासन जिसकी पहचान और वास अनुग्रह है।''

हमें निकट आना आवश्यक है ''कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे'' (आयत 16क)। उद्धार पाने के लिए हमें दया और अनुग्रह की आवश्यकता है; उद्धार पाए रहने के लिए भी हमें दया और अनुग्रह की आवश्यकता है। ''आवश्यकता के समय'' वाक्यांश का अर्थ ''समय पर सहायता के लिए'' है। हम ऐसे उद्धारकर्त्ता के लिए जो हमें समझता है परमेश्वर को धन्यवाद दें। उसकी ''समय पर सहायता'' के लिए हम उसे धन्यवाद दें!

हम अपने पापों का क्या करें? यह समझते हुए कि हम उन्हें छुपा नहीं सकते, हमें उन से मन फिराना और आज्ञा मानते हुए भरोसे के साथ यीशु की ओर लौट आना चाहिए (5:8, 9; मरकुस 16:15, 16)। हमें दया के लिए उसकी ओर देखना आवश्यक है। विश्वास योग्य मसीही होने के वावजूद हम कई बार निराश हो सकते हैं। ऐसा होने पर हमें प्रार्थना में यीशु के ''निकट आना'' चाहिए ताकि वह ''आवश्यकता के समय'' हमारी सहायता कर सके।

टिप्पणी

[1]जहां मैं रहता हूं, वहां ऐसे जूते जोड़े जा सकते हैं जिनसे व्यक्ति लम्बा लगता है, गद्दीनुमा कंधों वाले अच्छी तरह बनाए कपड़े, बालों के गुच्छे, कमरबन्द या कुशलता से किया गया मेकअप हो सकता है। जहां आप रहते हैं वहां सुन्दरता को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले कामों पर ध्यान दें।